Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
(A National Multidisciplinary bi-lingual Quarterly Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: (Cosmos: 7.866 & I2OR: 5.675) Volume 16, No. 03, July-September, 2026, pp. 33-37

''प्रकाश काव्य'' का ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. ललित कुमार पंवार*

सहायक आचार्य इतिहास, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

*Corresponding Author: lalitlpanwar7@gmail.com

Citation: *पंवार, ललित (2026). ''प्रकाश काव्य'' का ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन. Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 16(03), 33–37.*

ABSTRACT

'प्रकाश काव्य' भारतीय साहित्य की समृद्ध काव्य–परंपरा का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जिसमें मानवीय जीवन, सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक मूल्यों तथा आध्यात्मिक दृष्टि का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। प्रस्तुत अध्ययन में 'प्रकाश काव्य' के ऐतिहासिक विकास, साहित्यिक पृष्ठभूमि, प्रमुख विशेषताओं, भाषा–शैली, भाव–पक्ष एवं कला–पक्ष का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। साथ ही, काव्य में निहित मानवीय संवेदनाओं, नैतिक मूल्यों तथा समकालीन प्रासंगिकता का भी विवेचन किया गया है। यह अध्ययन 'प्रकाश काव्य' की साहित्यिक गरिमा, ऐतिहासिक महत्त्व एवं भारतीय काव्य–परंपरा में उसके विशिष्ट योगदान को रेखांकित करता है तथा शोधार्थियों एवं साहित्य–प्रेमियों के लिए उपयोगी संदर्भ प्रस्तुत करता है।

शब्दकोश: *प्रकाश काव्य, साहित्यिक विश्लेषण, ऐतिहासिक अध्ययन, काव्य–परंपरा, भारतीय साहित्य।*

प्रस्तावना

'प्रकाश' नाम की संज्ञक काव्य रचनाओं में किसी राजवंश या व्यक्ति विशेष की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला जाता है। ये काव्य रचनाएं राजस्थान के इतिहास तथा संस्कृति को उजागर करती है। राजस्थानी की 'प्रकाश' सम्बन्धी काव्य रचनाओं का परिचय इस प्रकार है –

राजप्रकाश

18वीं सदी में उच्चकोटि का डिंगल काव्य रचने वाले प्रतिभा सम्पन्न कवियों में किशोरदास राव का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रहा है। ये मेवाड़ के राणा राजसिंह के राज्याश्रित कवि थे। वि.सं. 1719 में इन्होंने 'राजप्रकाश' नामक ग्रन्थ का प्रणयन किया था जिसमें महाराणा राजसिंह के प्रशस्तिपरक कार्यकलापों का प्रभावशाली विवरण संकलित है। यह ग्रन्थ अप्रकाशित है।

132 छंदों में निर्मित 'राजप्रकाश' ग्रन्थ को डिंगल साहित्य का उत्कृष्ट साहित्यिक ग्रन्थ माना जाता है। ग्रन्थ के आरम्भ में महाराणा राजसिंह के पूर्वजों का संक्षिप्त यशोगान करते हुए कवि ने अपने चरित्र नायक के पराक्रम का दोहा, कवित, मोतीदाम आदि छंदों में बड़े विषयानुकूल शब्दावली में वर्णन किया है। विविध छंदों के प्रयोग का उल्लेख करते हुए किशोरदास ने लिखा है –

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

बाखांणे बाखांण छंद चन्द्रकळा प्रमाणे।
छंद दोइ पाघरी धरी लुक कहौ बखांणे।
प्रथम दंद तुक च्यारि अनै सैदाय्य भणीजै।
दुती छंद षट् साठि गहर सो जुगति गंणीजै।
बणि च्यारि तुक छंदह नणे, रसणा अहि अहिरिप रचै।
अन सार किसोर उचार करि, बेद भेद पींगल बचै।।[1]

हिन्दू शिरोमणि महाराणा राजसिंह का यश–वैभव चारों दिशाओं को महकाने वाले सुरभित पुष्प के समान है। राजसिंह की प्रसिद्ध चन्द्र–ज्योत्सना के समान प्रतिफल बढ़ने वाली तथा लोगों को शीतलता प्रदान करने वाली है। महाराणा का व्यक्तित्व अद्‌भुत शोभा वाले कमल पुष्प के समान है जो शीश उठाए पर परिस्थिति का सामना करता है। अपने चरित्रनायक की वंश परम्परागत विशेषताओं का शब्दांकन करते हुए कवि किशोरदास ने लिखा है –

कामती रती कमळ, बिमळ राह बिसतार।
धनि हिन्दू हिन्दूबांण धनि, कवि धनि किय्य करतार ।।[2]

सूरज प्रकाश

कविया करणीदान की यह सुप्रसिद्ध कृति है। मुख्य घटना महाराजा अभयसिंह जोधपुर के सरबुलन्दखां से हुए युद्ध एवं विजय (सन् 1730 ई.) का वर्णन है। कवि युद्ध में स्वयं उपस्थित था। युद्ध से लौटकर लगभग 1731 ई. के आसपास यह काव्य लिखा था।[3] सीताराम लालस द्वारा संपादित, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर की ओर से प्रकाशित होकर यह ग्रंथ 3 भागों में निकल चुका है।

कविया करणीदान के प्रस्तुत काव्य की मुख्य ऐतिहासिक घटना महाराजा अभयसिंह और गुजरात के सूबेदार सरबुलंद खां का युद्ध तथा अभयसिंह की विजय का वर्णन करना है। इसी का संक्षिप्तांश 'विरद शिणगार' है। करणीदान युद्ध में स्वयं साथ था और आँखों देखा वर्णन किया है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में अभयसिंह, अभयसिंह के पूर्वजों का संक्षिप्त उल्लेख किया है। सूर्यवंश की वंशावली, कुश से लेकर पुंज तक तथा जयचन्द से अजीतसिंह तक का संक्षिप्त वर्णन है। फिर अहमदाबाद पर चढ़ाई का विस्तृत वर्णन है। संवत् 1787 वि. (सन् 1730 जून) में गुजरात के सूबेदार सुबुलंदखां के मरहठों से मिल जाने तथा लूटमार करने से दिल्ली का बादशाह मुहम्मदशाह उससे नाराज हो गया और गुजरात का सूबा अभयसिंह का नाम कर दिया। खिलअत आदि के साथ उसे 18 लाख रूपये नकद तथा मय बारूद 50 छोटी बड़ी तोपें दीं।[4]

प्रासंगिक घटनाओं में प्रारम्भ में सूर्यवंशियों का पौराणिक आख्यानों एवं इतिहास पर आधारित उद्‌गम दिखाया है। महाराजा अभयसिंह के पूर्वजों का वर्णन इतिहास पर आधारित है। राजा पुंज के 13 पुत्रों में राठौड़ों की 13 शाखाओं के उद्‌भव, फिर जयचन्द से अजीतसिंह तक के राजाओं के जीवन की सभी घटनाओं का वर्णन है। नागौर–युद्ध की घटना भी इसी के अन्तर्गत आती है। नागौर के राव इन्द्रसिंह (इन्द्रसिंह रायसिंह का पुत्र तथा अमरसिंह का पौत्र था) को हराकर संवत् 1782 (ई. सन् 1725) के कार्तिक मास में अभयसिंह ने बखतसिंह को ''राजाधिराज'' का खिताब देकर नागौर प्रदान किया था[27], सूरज प्रकाश का ही 'सार–रूप' विरद शिणगार है। उसमें भी 1787 वि. की आश्विन शुक्ला 10 (विजयदशमी) को युद्ध का उल्लेख है –

सतियास बरस संबत सत्रास, महमंत सरद आसोज मास।
सन विजयदशम बधियो संग्राम, धिखियों अहमदपुर धामधाम।।[5]

कीरत प्रकाश

चौहान क्षत्रियों की चौबीस शाखाओं में राजस्थान में खींची, देवड़ा, हाड़ा, साँभरिया, सोनिगरा और सांचोरा शाखाएँ प्रसिद्ध रही है। इन शाखाओं में जिनका लम्बे समय तक सांभर पर शासन रहा वे सांभरिया, स्वर्णगिरि पर्वत के पास–पड़ौस जालौर भूभाग के शासक सोनिगरा और सांचोर स्थान के शासक सांचोरा नाम से प्रसिद्ध है। मारवाड़ में सांभरिया चौहानों के मकराना, मोकाला, सोनिगरों के चितलवाणा, राखी, (जोजावर) तथा सांचोरा चौहानों के संखवास आदि उल्लेखनीय ठिकाने थे। सांचोरा चौहानों के इतिहास के लिए 'कीरत प्रकाश रूपक' एक महत्वपूर्ण खण्डकाव्य है। यह ग्रंथ महाराजा विजयसिंह, जोधपुर के शासनकाल में नागौर प्रांत के मालावत सांदू चारण चैनकरण ने वि.सं. 1852 में लिखा था। चैनकरण महाराजा विजयसिंह, महाराजा भीमसिंह और महाराजा मानसिंह का दरबारी कवि था। महाराजा मानसिंह के धर्म–गुरू देवनाथ ने जिन पच्चीस कवियों को हाथी और लाखपसाव दिया उनमें चैनकरण भी पुरस्कृत हुआ था।[6]

'कीरत प्रकाश रूपक' जैसा कि नाम से ही प्रसिद्ध है, संखवास ठिकाने के सरदारों की उदारता तथा वीरतापूर्ण कार्यो की कीर्ति–प्रसार के निमित्त रचित काव्य है। संखवास ठिकाने से पूर्व यहां के सरदारों का सांचोर पर शासन रहा। कवि ने अपने इस काव्य में सांचोर तथा संखवास के शासकों की वीरता का दोहा, सोरठा त्रोटक, निसाणी, पद्धरी, कुण्डलिया, दवावैत, छप्पय (कवित्त) आदि 244 छंदों में वर्णन किया है। सांचोरा चौहानों को संखवास स्थान महाराजा अजीतसिंह ने सं. 1784 वि. में प्रदान किया था। अजबसिंह सांचोरा ने महाराजा अजीतसिंह की विपत्तिकाल में सहायता की थी। उसके उपलक्ष्य में अजीतसिंह ने अजबसिंह को संखवास की जागीर प्रदान की थी।

चैनकरण ने महाराजा विजयसिंह और जोधपुर के राज्यच्युत महाराजा रामसिंह तथा उनके पक्षधर मरहठों द्वारा लड़े गए मेड़ता और नागौर के युद्धों का सविस्तार वर्णन किया है। समकालीन रचना होने के कारण यह ग्रंथ इतिहास पक्ष के लिए बड़ा उपयोगी है। मेड़ता स्थान के युद्ध का वर्णन करते हुए कवि ने लिखा है –

लसकरां 'मेदपुर' आणा लूर। सोहियौ 'बिजो' हिंदवांण सूर।
सुज 'अभा' सुतन नृप 'रामसाह'। निज उतन काज जिणा नरांनाह।।
'पेसवा' हूत मिळ दलां पैल। थट दिखणा मुरधरा दिसी ठैल।।
'विजपाल' भूप तद कर विचार। भुज 'राजड़' रै तद दियौ भार।।
चालियौ विदा हुय चाहुवांण। मरहठां दिसी ठक अप्रमांण।।
मिळ प्रथम 'दिली' गढ़ मझ 'मलार'। सरसे पहिली सह समाचार।।
'मेडते' प्रथम समहर मंडाणा। धणा दला 'नागपुर' थया घाणा।।
'रामेणा' बढ़ी आयो रढाळ। 'विजपाल' अठी भूपत वडाळ।।

देवगुण प्रकाश[7]

कवि चिमन और देवगुण प्रकाश काव्य अद्यावधि विद्वानों की दृष्टि में अज्ञात है। ग्रन्थ की पुष्पिका के अभाव में कवि का परिचय अब भी अनुपलब्ध है। कवि ने ग्रंथ को सम्पन्न करते हुए आशीर्वादात्मक एक छप्पय में केवल अपने चिमन नाम का निर्देश किया है। यह काव्य डिंगळ भाषा शैली में प्रणीत होने के कारण इसका चारण–काव्य कृति होने का विश्वास किया जा सकता है। कवि का वह आशीर्वादात्मक छप्पय है –

जितै मेर गिर जमी गयणा बेथार ग्रहांपति।
तारामंडळ जितै रजै तारा तारां पति।।
जितै षमणा धणा गजै दिसांदस जितै सुरांपति।

सेस सींस भर जिते सुरांगण जितै सुरांपति।।

घू अडिंग जितै उदधि बदै 'चिमन' आसीस वर।

इळ भाण इळा राजौ इतै सुपह देव सिंवसिंघहर।।

'देवगुणप्रकाश' चारण शैली में रचित प्रबंधात्मक युद्ध काव्य है। शेखावाटी तथा सीकर राजवंश के इतिहास के लिए यह काव्य आधारभूत कृति है। प्रारंभ में कवि ने गणपति, विष्णु, शिव, ब्रह्मा और शक्ति इन पंचदेवों की वन्दना करते हुए वागेश्वरी सरस्वती का स्मरण किया है। तदनन्तर पुनः शिव की वन्दना कर कछवाहों के स्वामी राजा कुंतिल देव से क्रमशः जौणासी, उदयकरण तथा उनके तीनों प्रतापी पुत्रों नृमिंह (आमेर के राजा) बरसिंह (अलवर वालों के पूर्वज) और (बाळा शेखावतों के पूर्वज) का नाम निर्देश कर राव बाळा से राव मोकळ और राव शेखा का वर्णन किया है। राव शेखा के युद्धाख्यानों में पूर्वधरा के बादशाह, गौड़क्षत्रियों, अलिफखान और दहिया क्षत्रियों के साथ बावन युद्धों का संकेत किया है।

जसवंतसिंह के दौलतसिंह और उसके शेखा कुल रत्न राव शिवसिंह हुए। शिवसिंह ने कायमखांनियों, नागौर के राजधिराज बख्तसिंह, माधवसिंह रामपुरा और महाराजा ईश्वरी सिंह जयपुर की ओर से बगरू स्थान पर मल्हाराव होल्कर से जूझ कर खेत रहने का वर्णन किया है। रावशिवसिंह के पश्चात् राव समथसिंह, राव चांदसिंह द्वारा लड़े गए युद्धों का वर्णन कर चरित्रनायक रावदेवीसिंह के वीर कार्यो का वर्णन किया है। कवि ने कोई एक सौ तीन विविध छंदों में राव चांदसिंह तक वर्णन कर रावदेवीसिंह के जन्म का वर्णन करते हुए कहा है –

ऊंच लगन अणबीह, ऊंच महुरत आहंसी।

ऊंच नखित अभीत, ऊंच वेळां प्रम अंसी।।

ऊंच जोग आविय, ऊंच सुभ घडीव अंमी।

ऊंच मास अणरेह, ऊंच वर दीह अनंमी।।

कुल ऊंच सिखर क्रामति अकळबळ तप भासकर बियो।

चद रै देव वीराथिवर जंगा जीत जनमियो।।

भीम प्रकाश

रामदान लालस कृत 'भीम प्रकाश' में मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह का वर्णन मिलता है। इसमें राजा के शाही फरमान, गणगौर की सवारी का वर्णन 70 छंदों में मिलता है। यह ग्रन्थ तत्कालीन मेवाड़ के इतिहास को जानने में बहुत महत्वपूर्ण है।[8]

रघुवर जस प्रकाश

किशना आढा कृत 'रघुवर जस प्रकाश' ग्रन्थ राजस्थानी भाषा की छंद रचनाओं का सराहनीय ग्रन्थ है। छंदों के वर्णन में कवि ने अपने राम भक्ति का पूरा परिचय दिया है। राम गुण गाना कवि का प्रमुख उद्देश्य था[9] ग्रन्थ में डिंगल गीतों में वैणसगाई अलंकार के प्रयोग के उदाहरण दिए है, वे कवि की रचना का महत्व व मूल्य को दुगना कर, ग्रन्थ रचनाकार की काव्य प्रतिभा का परिचय देते है।[10]

पाबूप्रकाश[11] (मोडा आशिया)

इसमें राव सीहा के पौत्र धांधल के बेटे पाबू का जीवनवृत्त दिया है। जिसमें मुख्य रूप से उनके वीरतापूर्ण कार्यकलापों का वर्णन हुआ है। पाबू राठौड़ ने विवाह, मण्डप में उठकर गायों की रथार्थ लड़ाई की और प्राणोत्सर्ग कर अपने वचन का निर्वाह किया। वह लोकदेवता के रूप में पूजा जाने लगा और उसकी ख्याति दूर–दूर तक फैल गई। इस प्रकार इस काव्य में मुख्य प्रसंग राज्य प्राप्ति के लिए युद्ध करने का नहीं बल्कि

वचनबद्धता के लिए बलिदान और प्राणोत्सर्ग है। कवि ने पाबू के जीवन–चरित्र के साथ राजस्थान की संस्कृति का बड़ा ही जीवन्त चित्रण प्रस्तुत किया है। पाबू की उदारता, सहिष्णुता और शूद्र जाति के लोगों से उसका गहरा लगाव आदि कई प्रेरणादायक तथ्यों का वर्णन इसमें हुआ है। यह ग्रंथ 19वीं शताब्दी में लिखा गया। अतः उस समय की भाषा के अध्ययन हेतु उपयोगी है।

केहर प्रकाश[12] (कविराव बख्तावर)

इसमें कवि ने देवगढ़ बाहरिया के चौहानों का संक्षिप्त विवरण दिया है, जिसमें मदनपाल व विजयपाल की गौलकुंडे के शाह के साथ हुई लड़ाइयों का विवरण मुख्य है। विजयपाल के बाद क्रमशः भांण और भीम हुए। भीम के पुत्र केसरीसिंह के नाम से यह ग्रन्थ रचा गया। यों तो इसमें मुख्य रूप से केसरीसिंह व कमला नाम की प्रेयसी का वृत्तांत है। परन्तु छोटे–मोटे युद्धों का विवरण भी दिया है जिससे स्थानीय धटनाओं पर कुछ नूतन प्रकाश पड़ा है। भाषा के विकास की दृष्टि से ग्रंथ महत्वपूर्ण है।

कमल प्रसन्न वेश्या केसरीसिंह पर मोहित हो गई थी, दिल्ली का बादशाह फिरोज और अहमदाबाद का अहमद जी उस वेश्या को अपने चंगुल में फंसाना चाहते थे, परन्तु वेश्या कमल प्रसन्न केसरी सिंह के अलावा किसी भी पर उसका मन डिगा नहीं था।

''केहरियां गल वथ कियो, सोहरियों सिरदार,
भव टिपरियो आदस क्रोड क्रोड धिक्कार।।''[13]

इस प्रकार ये प्रमुख 'प्रकाश' साहित्य राजस्थानी साहित्य इतिहास सम्बन्धी प्रमाणिक जानकारी उपलब्ध कराते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शेखावत, सौभाग्यसिंह के पास उपलब्ध ह. लि. प्रति, छंद–120
2. वही, छंद–131
3. जिज्ञासु, डॉ. मोहनलालः चारण साहित्य का इतिहास, भाग–1, पृ.239
4. ओझा, गौरीशंकर हीराचंदः राजपूताने का इतिहास, भाग–2, पृ. 612
5. वही, पृ. 608
6. विरद सिणगार, छंद–43–44
7. स्वामी, नरोत्तमदास (सम्पा.): बांकीदास री ख्यात, पृ.172
8. शेखावत, सौभाग्यसिंहः राजस्थानी साहित्य सम्पदा,पृ.73
9. मेनारिया, डॉ. मोतीलालः राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ.206
10. लालस, सीताराम (सम्पा.): रघुवरजस प्रकाश, पृ.6
11. वही, पृ. 8
12. भाटी, डॉ.नारायणसिंह (सम्पा.): पाबूप्रकाश, महा.मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर
13. सिंह, कविराव मोहन (सम्पा.): केहर प्रकाश, वैदिकमंत्रालय, अजमेर, 1934 ई.
14. राठौड़, डॉ. प्रतापसिंहः राजस्थानी वीराख्यान, पृ. 91

❑❑❑